Research Discourse - ISSN 2277-2014
An International Refereed Research Journal
Published by : South Asia Research & Development Institute
Varanasi, U.P. (INDIA)

Indexed by : IIJF, I2OR, SJIF
IIJ Impact Factor : 2.471
Year-VII, No. XXIII, April-June, 2017
Page No. : 29-31

आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के शैक्षिक स्तर का बालकों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन

किरण बुनकर*
डॉ0 विष्णु कुमार**

प्रस्तावना : बालक देश का भावी नागरिक होता है। बालक के सर्वांगीण विकास में ही राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य छिपा है। हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू बालकों को राष्ट्र का महत्त्वपूर्ण अंग मानते थे। उनके अनुसार बालक फूलों के समान होते हैं, जिन्हें खिलने के लिए बेहतर अवसरों एवं सुविधाओं की आवश्यकता होती है। स्वतंत्र भारत की निर्वाचित सरकार ने सीमित संसाधनों के बावजूद बालकों को अधिकाधिक लाभ पहुंचाने के प्रयास प्रारम्भ किए। अतः इस दिशा में बालकों के लिए अगस्त 1974 में राष्ट्रीय नीति का निर्माण किया गया। इस नीति में बालकों को राष्ट्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हिस्सा घोषित किया गया। जिनका पालन–पोषण संपूर्ण राष्ट्र की जिम्मेदारी है। इसलिए बालकों को बाल्यावस्था से ही आवश्यक सेवाएँ प्रदान करना प्रत्येक राज्य की नीति होनी चाहिए।

बालक राष्ट्र नीति 1974 के अनुसार बालकों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास की नींव पूर्व बाल्यावस्था में ही डाली जानी चाहिए, क्योंकि वयस्कों की अपेक्षा बालकों को प्रशिक्षित करना अपेक्षाकृत अधिक आसान है। कहा भी गया है कि – "बालक कोरे कागज के समान होते हैं, जिसमें हम जो लिखेंगे वही छपता है।" वैज्ञानिक अनुसंधानों के अनुसार भी बालकों की प्रारम्भिक आयु 0–6 वर्ष तक का समय समुचित वृद्धि एवं विकास का समय होता है। संपूर्ण विश्व में सर्वसम्मति से यह माना गया है कि बालकों की 3–6 वर्ष तक की आयु लचीली, आसानी से प्रभावित की जाने वाली तथा शैक्षिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है। अतः यह समय शैक्षिक, शारीरिक, मानसिक, सृजनात्मक, भाषायी व सामाजिक विकास के दृष्टि से उत्तम होता है। इस बात की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है कि बाल्यकाल में बालक उत्पन्न होने वाली किसी प्रकार की कमी को पहचान कर उसमें सुधार करने के प्रयास हो सकें। विशेष रूप से निम्न तथा शोषित वर्ग के बालकों के लिए इस प्रकार के प्रावधान किये जाने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस समस्या के समाधान हेतु महात्मा गांधी के 106वें जन्मदिवस पर 2 अक्टूबर 1975 में केन्द्र सरकार ने "समेकित बाल विकास कार्यक्रम" प्रारम्भ किया। वर्तमान में यह कार्यक्रम सभी जिलों की पंचायत समितियों एवं 1 लाख जनसंख्या वाले 20 शहरों में चल रहा है। इनमें 48,372 आंगनबाडी केन्द्र तथा 2681 मिनी आंगनबाड़ी केन्द्र चल रहे हैं।

समस्या का औचित्य :– हमारे देश में आज भी विभिन्न जगह जैसे– बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, मंदिर आदि पर ऐसे बच्चे देखने को मिल जाते हैं, जो शिक्षा से महरूम हैं। इन बच्चों की तादात बहुत अधिक है। शिक्षा के अतिरिक्त बाल स्वास्थ्य संबंधी अज्ञानता भी भारतीय जनता में देखने को मिलती है। इसका प्रमाण आए दिन समाचार–पत्रों में विभिन्न संक्रमणों के फलस्वरूप अनेक बच्चे असमय मौत की नींद सो जाते हैं। यद्यपि भारत सरकार द्वारा बालकों के शैक्षिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निवारण तथा इनके स्तर में सुधार हेतु अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके बावजूद अनेक बालकों को इन विशेष कार्यक्रमों एवं सेवाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है। उपरोक्त शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे– संयुक्त बाल विकास कार्यक्रमों के प्रति अज्ञानता, इन कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु अभिप्रेरणा का अभाव, परिवार की आर्थिक स्थिति, कृषि कार्यों में रत् होने के कारण माताओं द्वारा बालकों की देखभाल में कमी आदि। इन कारणों ने मेरे ध्यान को संयक्त

Scanned by CamScanner